जब लेवियों ने याजकों से अधिक समर्पण दिखाया

“यद्यपि अर्पण करने के लिए बहुत सी भेंटें थीं, परंतु उन सभी को संभालने के लिए बहुत कम पुजारी थे जिन्होंने स्वयं को पवित्र कर लिया था। इसलिए लेवियों ने तब तक मदद की जब तक काम पूरा नहीं हुआ और और अधिक पुजारी स्वयं को शुद्ध नहीं कर
चुके थे। लेवियों ने स्वयं को पवित्र करने में पुजारियों से अधिक निष्ठा दिखाई।”

(2 इतिहास 29:34)

हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में आपको स्नेहपूर्ण अभिवादन।

यह संदेश सीधे आध्यात्मिक नेताओं—पादरियों, मंत्री, बुजुर्गों और परमेश्वर की सेवा करने वाले सभी लोगों के लिए है।

परमेश्वर के राज्य में सच्चा नेतृत्व हृदय की निष्ठा और पवित्रता से मापा जाता है, न कि पद या रैंक से।

पुराने नियम में, केवल लेवी वंश के पुजारी ही मंदिर में पवित्र कर्तव्यों—जैसे बलिदान चढ़ाना और धूप जलाना—को निभाने के लिए अधिकृत थे (लैव्यव्यवस्था 21:10-15)। ये कर्म प्रायश्चित्त और परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का प्रतीक थे।

लेकिन राजा हिज़किय्याह के सुधार के समय, यह स्पष्ट हुआ कि कई पुजारी या तो पूरी तरह से पवित्र सेवा के लिए तैयार नहीं थे या उनका समर्पण कम था। उनकी यह कमी सच्ची उपासना की बहाली में बाधा बन रही थी।

इसी समय लेवियों, जो सहायक भूमिकाएँ निभाते थे—जैसे मंदिर की सुरक्षा और उपासना का नेतृत्व—ने आगे बढ़कर सेवा की। बाइबल में उनके समर्पण और पवित्रता को विशेष रूप से उजागर किया गया है: उन्होंने “पुजारियों की तुलना में अपने हृदय को अधिक सीधे करके स्वयं को पवित्र किया”।

इससे हमें एक शाश्वत आध्यात्मिक सत्य सीखने को मिलता है: परमेश्वर उन लोगों का सम्मान करता है जो पूरे हृदय और निष्ठा से स्वयं को पवित्र करके उसकी सेवा करते हैं, चाहे उनका पद या शीर्षक कुछ भी हो।

आधुनिक संदर्भ में:

चर्च में नेतृत्व केवल पद या शीर्षक नहीं है। इसके लिए एक ईमानदार हृदय, विश्वासयोग्यता और सेवा के लिए तत्परता आवश्यक है—यहाँ तक कि अपेक्षा से अधिक सेवा करने की तत्परता।

आप पाएंगे कि कुछ आधिकारिक नेताओं की उपस्थिति प्रार्थना में नहीं होती, जिम्मेदारियों की अनदेखी होती है या उनमें उत्साह की कमी होती है। वहीं, बिना किसी आधिकारिक पद वाले लोग विनम्रता, समर्पण और उत्साह के साथ सेवा करते हैं।

नेतृत्व और हृदय पर बाइबिलीय आधार:

1. सच्ची महानता पर यीशु का उपदेश:

“जो पहले हैं वे बाद में होंगे, और जो बाद में हैं वे पहले होंगे।” (मत्ती 19:30)

यह बताता है कि परमेश्वर अक्सर हमारी मानवीय अपेक्षाओं को उलट देते हैं और विनम्र तथा निष्ठावान लोगों को ऊपर उठाते हैं।

2. हृदय पर आधारित बुलावा:

“विवाह भोज तैयार है; परन्तु जिन लोगों को मैंने बुलाया था
वे आने योग्य नहीं थे।” (मत्ती 22:8)

यह दिखाता है कि परमेश्वर का बुलावा योग्यता और हृदय की प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है, केवल बाहरी पद या प्रमाणपत्र पर नहीं।

3. सेवक नेतृत्व पर पौलुस की शिक्षा:
“तुम्हारे साथ ऐसा न हो। बल्कि जो तुम में महान होना चाहता है, वही तुम्हारा सेवक बने।” (मत्ती 20:26)
सच्चे नेता विनम्रता और बलिदान के साथ सेवा करते हैं।

प्रोत्साहन और चुनौती:

यदि आप आध्यात्मिक नेता हैं और अपने समर्पण में उदासीन हैं, तो पश्चाताप करें और अपने हृदय को नवीनीकृत करें। आपका नेतृत्व परमेश्वर की ओर से एक पवित्र जिम्मेदारी है (1 पतरस 4:10), और आपको इसके लिए परमेश्वर के सामने जवाब देना होगा (रोमियों 14:12)।

यदि आप बिना किसी आधिकारिक मान्यता के सेवा कर रहे हैं, तो विनम्रता और निष्ठा के साथ जारी रखें। परमेश्वर हृदय देखता है (1 शमूएल 16:7) और उन्हें ऊपर उठाता है जो पवित्रता और उत्साह के साथ उसकी सेवा करते हैं।

आइए हम सब, लेवियों की तरह, अपने आप को पूरी तरह से परमेश्वर के कार्य के लिए समर्पित करें और स्वेच्छा से सेवा करें, चाहे हमारा पद या शीर्षक कुछ भी हो।
आमीन।

Share on:
WhatsApp